छत्तीसगढ़ की जन वेबसाइट

www.cgnet.in

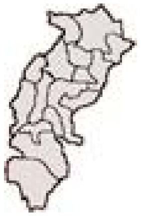

डसना नहीं पर फुफकारना जरूरी है

बासी मा उफान

शुभांशु चौधरी

पिछले हफ्ते मैंने यह लिखा था कि और वर्षगांठों की तरह इस साल रिबई पंडो कांड की भी 15 वीं वर्षगांठ है और मुझे लगता है कि इसी बहाने ही सही, हमें इस साल भूख की राजनीति की थोड़ी अधिक चर्चा करने की कोशिश करनी चाहिए।

संभवतया यह साल यह सीखने का साल है कि रिबई पंडो कांड के बाद क्या क्या हुआ और क्या क्या नहीं हुआ और क्या क्या हो सकता था। प्रताप नारायण सिंह उन्हीं दिनों वाड्रफनगर पहुंचे थे और उन्होंने सरगुजा ग्रामीण विकास संस्थान की स्थापना की ही थी। रिबई पंडो का गांव वाड्रफनगर तहसील के अंतर्गत ही आता है जिसके परिवार में तथाकथित रूप से भूख से हुई दो मौतों के कारण राजनीतिक बवाल खड़ा हो गया था और रिबई पंडो एक अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व बन गए थे। मुझे लगा प्रताप नारायण सिंह की जुबानी यह सुनना उचित होगा कि रिबई पंडो कांड के बाद क्या क्या हुआ? इसी साल पहली जनवरी के दिन दोपहर बाद प्रताप भाई के साथ मैं रिबई पंडो के गांव बीजाकुरा पहुंचा था जिसके बारे में पिछले हफ्ते बासी मा उफान में लिख चुका हूं।

अब न सिर्फ रिबई पंडो बल्कि उसके बेटे और बीवी की भी मौत हो चुकी है और उसके परिवार का बीजाकुरा से नामोनिशान मिट गया है। बीजाकुरा के लोगों से बात करते करते हमें पता ही नहीं चला कब शाम हो गई। अब हम वापस लौटने के लिए निकल पड़े। हमें आगे कई घंटे का सफर पैदल ही तय करना था जहां सड़क पर हमारी गाड़ी हमारा इंतजार कर रही थी। मैंने प्रताप भाई से 1992 में रिबई पंडो कांड के बाद क्या हुआ, बताने का अनुरोध किया। हमने सोचा कहानी सुनते सुनते रास्ता भी कट जाएगा।

उन्होंने बताना शुरू किया–मैं उन दिनों नया नया वाड्रफनगर में आया था और रिबई पंडो कांड की खूब चर्चा थी। इस बीच विपक्ष के नेता दिग्विजय सिंह भी वाड्रफनगर में भूख हड़ताल पर बैठकर जा चुके थे। पर मैं अपनी संस्था के काम में व्यस्त था और इस विषय पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाया था। फिर एक दिन सुना कि प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव भी आ रहे हैं। मैंने सोचा कि अब जाकर पता लगाना ही चाहिए कि असली कहानी क्या है?

मैं सुबह सुबह चाय पीकर अपनी मोटर साइकिल उठाकर नरसिम्हा राव को सुनने चल पड़ा। बीजाकुरा हमारे गांव से करीब 50 किलोमीटर की दूरी पर है। नरसिम्हाराव का हेलीकॉप्टर रघुनाथनगर में उतरा और दोनों पक्ष के लोग अपने अपने पोस्टरों के साथ मंच के सामने मौजूद थे। भाजपा के लोग बता रहे थे कि यह भूख से मौत नहीं है। यहां के विधायक रामविचार नेताम ने तो यह बयान दिया था कि रिबई पंडो ने अपनी बहू और नाती की मौत के बाद 80 ब्राह्मणों को भोज दिया था तो यह भूख से मौत कैसे हो सकती है? मंच पर कांग्रेस के बड़े बड़े दिग्गज मौजूद थे। जहां तक मुझे याद आता है, अर्जुन सिंह, मोतीलाल वोरा, माधवराव सिंधिया, शुक्ल बंधु इत्यादि सभी उपस्थित थे, दिग्विजय सिंह तो थे ही।

मैं चुपचाप किनारे जाकर बैठ गया। मैंने देखा, नरसिम्हा राव दोनों पक्षों के पास गए, उनकी बात सुनने, फिर मंच पर आकर वे सिर्फ दो मिनट बोले और किसी नेता को बोलने नहीं दिया।

नरसिम्हाराव ने कहा– मैं इस विवाद में नहीं पड़ना चाहता कि यह मौत भूख से हुई कि बीमारी से। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि मैंने हेलीकॉप्टर से देखा कि यह इलाका अत्यंत पिछड़ा हुआ है और इस इलाके का विकास होना चाहिए। इसके बाद सभा समाप्त हो गई।

मैं कभी बीजाकुरा गया नहीं था। मैंने सोचा कि खुद जाकर पता लगाना चाहिए कि असली कहानी क्या है? अब तक बीजाकुरा इतने नेता जा चुके थे कि उनकी गाड़ियों के निशान से रिबई पंडो के घर तक बिलकुल सड़क जैसी बन गई थी और मुझे किसी से कुछ पूछने की जरूरत ही नहीं पड़ी। मैं बिलकुल रिबई पंडो के घर पहुंच गया। मैंने पहले लोगों के घर झांक कर देखा कि किसके पास कितना अनाज है। मुझे पूरे गांव में सिर्फ डेढ़ किलो कुढ़ी (चावल का टुकड़ा) मिला और कुछ नहीं।

मैं आश्चर्यचकित था। मैंने पूछा–इतने नेता आए, उन लोगों ने आपको कुछ नहीं दिया? उन्होंने बताया– रानीजी के यहां से हर परिवार को दो किलो चावल मिला है। रिबई पंडो के घर के पास जो पेड़ है उसके नीचे हम बैठे। मैंने लोगों से पूछा–अगर मैं आपकी मदद करना चाहता हूं तो क्या मदद चाहिए आपको? लोगों ने कहा–फोकट में तो कोई कुछ देगा नहीं, कुछ काम दीजिए साहब। मैंने आगे पूछा–क्या काम? उन्होंने तपाक से जवाब दिया–सड़क बनवा दीजिए। मैंने पूछा–तो आप लोगों में से कितनों के पास गाड़ी है? उन्होंने कहा–क्यों मजाक करते हो साहब, खाने को तो है नहीं, साइकिल तक तो नहीं है हम लोगों के पास। मैंने फिर पूछा–आप लोग गरीब क्यों हैं? उनको मेरी बात समझ में आ गई। उन्होंने कहा–पानी का बंदोबस्त हो जाए तो हमारी फसल अच्छी हो जाएगी और हमें आगे से किसी से मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं उन दिनों इलाके में नया था पर अंबिकापुर में कुछ मित्रों से बात की और कुछ चंदा इकट्ठा किया। इसमें हमें लगभग दो हफ्ते लग गए। उसके बाद हम एक ट्रक अनाज लेकर बीजाकुरा पहुंचे और पानी रोकने के लिए बांध बनाने का काम शुरू किया। लोगों ने खुद ही बताया कि कहां बांध बनाने से पानी साल भर रुका रहेगा।

पहली जनवरी को इस बांध को मैंने भी देखा, उसमें आज भी पानी भरा हुआ है। हमें बताया गया कि इस बीच सरकार ने भी दो सीमेंट के चेक डैम बनवाए हैं जो सूखे पड़े हैं।

प्रताप भाई ने बताया कि इसके आगे की कहानी और भी दिलचस्प है– कुछ दिनों बाद मेरे पास कलेक्टर का बुलावा आया। टीएस छतवाल उन दिनों कलेक्टर हुआ करते थे। उन्होंने मुझसे पूछा–किसकी परमिशन से आपने यह काम शुरू करवाया है? उन्होंने मुझे धमकाते हुए कहा कि काम तुरंत बंद करवाएं। मैंने जब कहा कि आप किस परमिशन की बात कर रहे हैं तो उन्होंने बेहूदे तर्क दिए कि हो सकता है जिस जमीन पर आप बांध बनवा रहे हैं उस पर प्रशासन का रेलवे लाइन बिछाने का विचार हो। संभवतया अपने राजनीतिक आकाओं के आदेश पर प्रशासन यह साबित करने पर तुला हुआ था कि बीजाकुरा में सब कुछ ठीक है और भूख की कहानी सिर्फ विपक्ष द्वारा गढ़ी गई है और यहां किसी काम की जरूरत नहीं है। इसके बाद जब मैं बीजाकुरा पहुंचा तो गांव वालों ने मुझे बताया रेंज ऑफिसर पी एस पटेल साहब आए थे और काम बंद करने को कह गए हैं। अब हम क्या करें? मैंने उनको एक कहानी सुनाई जिसका मर्म यह था कि हम हिंसा का उपयोग बिल्कुल नहीं करेंगे पर हमें फुफकारना भी नहीं छोड़ना है। हमें यह दिखा देना है कि जरूरत पड़ी तो हम डस भी सकते हैं। लोगों को बात समझ में आ गई।

कुछ दिनों बाद एसडीएम रात्रे कुछ पुलिस वालों को लेकर काम बंद करवाने बीजाकुरा पहुंचे। बैठक के दौरान एक गांव वाले ने अचानक कहा–रात्रे साहब, आप लोग चारों ओर से घिर गए हैं। हमारे सारे तीरों में विष लगा हुआ है। आप में से कोई भी बच के नहीं जाएगा। पुलिस वालों की संख्या कम थी और गांव वालों के अनुसार रात्रे और पुलिस वाले पहाड़ी से लुढ़कते गिरते ऐसे भागे कि देखने लायक था। जब तक हमारा काम चलता रहा लौटकर कोई नहीं आया– न रेंजर, न एसडीएम, न कलेक्टर।

कहानी सुनते सुनते हम दोनों इतने तल्लीन हो गए थे कि रास्ता भटक गए। एक जगह हमें बाएं मुड़ना था, हम दाएं मुड़ गए थे। घुप्प अंधेरी रात थी। कुछ नजर भी नहीं आ रहा था। चांद और तारों को देखकर प्रताप भाई ने सही दिशा निकाली जिससे हम सड़क तक पहुंच सके।

मुझे लगा संभवतया हमारी तरह इस देश की राजनीति और प्रशासन भी दिशा भटक चुके हैं और इस अंधेरी रात में शायद उन्हें भी सही रास्ता दिखाने की जरूरत है...

(लेखक बीबीसी के पूर्व पत्रकार हैं और सिटीजन जर्नलिज्म के प्रयोग छत्तीसगढ़ नेट www.cgnet.in से जुड़े हैं।)

PACS Madhya Pradesh & Chhatisgarh